ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

गृह विज्ञान शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना और सतत विकास को बढ़ावा देना

उर्मिला यादव, गृह विज्ञान, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान
डॉ. पूर्णिमा श्रीवास्तव, प्रोफेसर, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

अमूर्त

महिला सशक्तिकरण आंदोलन ने सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा की आवश्यकता को हमेशा जोर दिया है। व्यक्तिगत विकास, स्व–निर्भरता, सामाजिक विकास, सामाजिक एकीकरण, उत्पादक क्षमता, और राजनीतिक ज्ञान को महिलाओं के विकास शिक्षा में एकीकृत करना चाहिए। उपरोक्त गुणों का विकास महिला विकास पेडागोजी के माध्यम से सबसे प्रभावी होता है। महिलाओं को शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, और आर्थिक विकास के लिए घरेलू विज्ञान की आवश्यकता है। महिलाओं का सशक्तिकरण उनकी आत्मसम्मान, विकल्प बनाने की क्षमता, संसाधनों का प्रबंधन करने की योग्यता, सामाजिक परिवर्तन के लिए अपने और दूसरों के लिए निर्णय लेने का अधिकार, साथ ही उनकी निर्णय–निर्धारण की क्षमता को सुधारता है। घरेलू विज्ञान प्रशिक्षण महिलाओं को आज के प्रौद्योगिकी चुनौतियों को प्रबंधित करने के लिए वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी कौशल प्रदान करेगा। घरेलू विज्ञान महिलाओं को शिक्षित करता है और उन्हें घर और विदेश में चुनाव करने और जिम्मेदारियों को संभालने की क्षमता प्रदान करता है। सशक्त महिलाएं ऐसे निर्णय लेती हैं जो उन्हें अपने लक्ष्य को चुनने, समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बदलने, और सामर्थ्य को खात्मा करने की स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं।

महिलाएं पर्यावरण प्रबंधन और विकास में योगदान करती हैं। उन्हें दीर्घकालिक विकास के लिए पूरी तरह से लगाना चाहिए। लिंग समानता को बढ़ावा देने के दो कारण होते हैं। पहला, लिंग समानता ''पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकार, अवसर, और जिम्मेदारियां'' एक मानव अधिकार और सामाजिक न्याय समस्या है। दूसरा, दीर्घकालिक, लोग केंद्रित विकास लिंग समानता की आवश्यकता होती है। इस अध्याय में संरक्षित विकास के लक्ष्य में महिलाओं की सशक्तिकरण पर चर्चा की गई है, कुछ मूल अवधारणाओं और मामलों की स्पष्टीकरण किया गया है, और ''महिला सशक्तिकरण'' पर नए संरक्षित विकास लक्ष्य 5 को परिचय दिया गया है। ''समस्त महिलाओं और लड़कियों को समानता प्राप्त करना।''

कीवर्ड गृह विज्ञान शिक्षा, सतत विकास, महिला सशक्तिकरण

परिचय

सशक्तिकरण को ष्एक बहुपक्षीय सामाजिक प्रक्रियाष् के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो लोगों को उनके जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करने में मदद करता है। यह एक प्रक्रिया है जो लोगों की शक्ति को विकसित करती है ताकि वे अपने जीवन, समुदाय, और समाज में उन मुद्दों पर कार्रवाई कर सकें जिन्हें वे महत्वपूर्ण मानते हैं। व्यक्तिगत और समूह सशक्तिकरण को उनकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का डिग्री के रूप में वर्णित किया जाता है। इससे व्यक्तियों को अपने हितों का प्रचार करने की क्षमता प्राप्त होती है जिसे वे जिम्मेदारीपूर्वक और स्व–निर्धारित तरीके से कर सकते हैं। सशक्तिकरण एक व्यापक, कार्यात्मक अवधारणा है जो व्यक्तियों को उनके जीवन के सभी पहलुओं में उनकी पूर्ण व्यक्तित्व संभावना को साकार करने और प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करनी चाहिए। इसमें उनके जीवन की योजना बनाने की व्यापक क्षमता, संसाधनों और ज्ञान की व्यापक पहुंच, और अधिकारिक निर्णय आजादी शामिल है। व्यक्तियों को सामाजिक रूप, आदतों, और विश्वासों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों से भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

इस परिणामस्वरूप, ''सशक्तिकरण'' का अर्थ होता है ''कमजोरी से शक्ति की ओर बढ़ना।'' महिलाओं का सशक्तिकरण संवैधानिक अधिकार, मौलिक मानवीय अधिकार, और राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक प्रभावशाली शक्ति है, चाहे जाति, धर्म, या विश्वास हो। शिक्षा, जागरूकता, साक्षरता, और प्रशिक्षण, सभी महिलाओं को सशक्त करने की प्रक्रिया का हिस्सा है। षशिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरणष् की स्थापना की आवश्यकता को 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में और वर्तमान ''लक्ष्य 5 जैसे लिंग समानता,'' जो 17 स्थायी विकास लक्ष्यों में से एक है, पर जोर दिया गया था। स्व–सार्थकता, स्व–संवैधानिक, और स्व–रक्षण सशक्तिकरण के पहलू हैं। निर्णय लेने की भावना एक सशक्तिकरण की भावना से उत्पन्न होती है।

महिला सशक्तिकरण एक विश्वव्यापी कार्यवाही है और इसे 1985 में छ।त्व्ठप् में अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में संवर्धित किया गया था। महिला सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जिसमें शामिल हैं–

- समाज की संपत्तियों के उपयोग के लिए समतुल्य दृष्टिकोण
- लैंगिक असमानता का निषेध
- हिंसा से मुक्ति
- आर्थिक स्वतंत्रता

- सभी निर्णय लेने वाली संस्थाओं में भागीदारी।
- स्वयं के जीवन के बारे में निर्णय लेने की क्षमता।

➢ **महिला सशक्तीकरण**

महिलाओं का सशक्तिकरण उन्हें अपने जीवन पर अधिक अधिकार और प्रभाव प्राप्त करने का अर्थ है। इससे समझा जा सकता है कि महिलाएं विभिन्न आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, और राजनीतिक क्षेत्रों में पुरुषों के समानता के लिए एक नुकसान के रूप में रहने के विचार को जारी रखती है। इस परिणाम स्वरूप, महिलाओं का सशक्तिकरण लिंग समानता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जा सकता है, जिसे ष्व्यक्ति के अधिकार, कर्तव्य, और अवसरों को इस बात पर नहीं प्रभावित किया जाएगा कि वह पुरुष हैं या महिलाष के रूप में वर्णित किया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार, एक सशक्तिकृत महिला के पास आत्ममूल्य की भावना होती है। उसकी अपने निर्णय लेने की क्षमता होती है और उसे विभिन्न संभावनाओं और संसाधनों का पहुंच होता है जो उसे विभिन्न संभावनाओं प्रदान करते हैं। उसका अपने जीवन पर अधिकार होता है, घर के अंदर और बाहर, और उसकी आत्मनिर्भरता होती है, और वह सामाजिक विकास के दिशा में प्रभाव डालने की शक्ति होती है, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, एक और न्यायमय सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए।

''महिला सशक्तिकरण को उन्हें अधिकार, शक्तियाँ, अवसर, और कर्तव्य प्रदान करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, ताकि वे अपनी पूरी संभावना को पहचान सकें, स्वतंत्र रूप से सोच सकें, और समाज में पुरुषों के साथ बराबरी के आधार पर कार्रवाई कर सकें।''

शिक्षा को हमेशा महिला सशक्तिकरण के वैश्विक संघर्ष में सामाजिक परिवर्तन के लिए सबसे महत्वपूर्ण हथियार के रूप में उचित माना गया है। गुन्नार मिर्डल (1969) के अनुसार, शिक्षा का स्वतंत्र और ''साधनात्मक'' मूल्य दोनों होना चाहिए, अर्थात, शिक्षा का उद्देश्य आत्मविश्वास को तौलना करना चाहिए साथ ही ज्ञान और कौशल सिखाना चाहिए। होम साइंस शिक्षा का उद्देश्य केवल लड़कियों को विवाह के लिए पासपोर्ट के रूप में उपयोग किए जाने वाले डिग्री प्राप्त करने के लिए नहीं है, बल्कि उन्हें व्यक्तिगत, सामाजिक, और आर्थिक क्षेत्रों में उनकी पूरी संभावना तक पहुंचने में मदद करने के लिए है।

सतत विकास की अवधारणा

पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग सतत विकास को ऐसे विकास के रूप में परिभाषित करता है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता को खतरे में डाले बिना वर्तमान मांगों को पूरा करता है।

इसमें दो प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हैं–

- ''आवश्यकताओं'' की अवधारणा, विशेष रूप से दुनिया के गरीबों की सबसे बुनियादी आवश्यकताएं, जिन्हें पहली प्राथमिकता दी जानी चाहिए, और
- प्रौद्योगिकी और सामाजिक संरचना के स्तर द्वारा पर्यावरण की मौजूदा और भविष्य की आवश्यकताओं की आपूर्ति करने की क्षमता पर लगाए गए प्रतिबंधों का विचार।

  आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन, और पर्यावरण संरक्षण वह तीन मौलिक कारक हैं जो सतत विकास को प्राप्त करने के लिए समानुपात किए जाने चाहिए।

सतत विकास का लक्ष्य है कि सभी के लिए अवसर विस्तारित करके गरीबी को खत्म किया जाए, असमानताओं को कम किया जाए, मौलिक जीवन मानकों को बढ़ावा दिया जाए, और न्यायमय सामाजिक विकास और समावेश को प्रोत्साहित किया जाए। सभी नीतियों और क्रियाओं को जो विशाल रूप से स्वतंत्रता, लोकतंत्र, और मौलिक अधिकारों का सम्मान करने वाले समाज की स्थापना के लिए होती हैं, साथ ही पीढ़ियों के बीच समान अवसर और सद्भाव को बढ़ावा देती हैं, उन्हें सतत विकास को मौलिक परिक्षेप में शामिल किया जाना चाहिए।

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजीएस)

2015 के सितंबर 25 को, न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने ष्हमारी दुनिया को परिवर्तित करनारू 2030 के लिए सतत विकास की अजेंडाष नामक पोस्ट–2015 विकास योजना पर एक प्रस्ताव पारित किया। 2030 के लिए सतत विकास की अजेंडा, जो 1 जनवरी, 2016 को प्रभावी हो गई, में 17 सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) और 169 लक्ष्य शामिल हैं। प्रत्येक एसडीजी के पास 2030 तक पूरे किए जाने वाले निश्चित लक्ष्य हैं। ये ऊपर उल्लिखित सतत विकास के तीन पहलुओं पर प्रारूपित लक्ष्यों को समालोचित करते हैंरू आर्थिक विकास, सामाजिक समावेश, और पर्यावरण संरक्षण।

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

आकृति 1 संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य

सतत विकास के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना

महिला सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है, और सतत विकास समाज–सांस्कृतिक, आर्थिक, और पर्यावरणीय कारकों को शामिल करता है, जो विभिन्न विषयों को समाविष्ट करता है। 2030 एजेंडा महिला समानता और महिला सशक्तिकरण पर जोर देता है, जिनका एजेंडा में उल्लेख किए गए हैं और इसकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं: ''महिला समानता और सभी महिलाओं और लड़कियों का सशक्तिकरण सारे लक्ष्य और लक्ष्यों में प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान करेगा,'' जनरल असेंबली एजेंडा निर्णय में कहती है। एसडीजी 5 ''समानता और सभी महिलाओं और लड़कियों का सशक्तिकरण'' की दिशा में देखते हुए, 2030 एजेंडा में महिलाओं के सशक्तिकरण के महत्व को और भी स्पष्ट किया जाता है।

''सतत विकास लक्ष्य हमें गरीबी, जलवायु परिवर्तन और हिंसा जैसी दुनिया की कुछ सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं को हल करने के लिए एक एकीकृत योजना और एजेंडा प्रदान करते हैं।'' यूएनडीपी के पास देशों को आगे बढ़ने और सतत विकास हासिल करने में सहायता करने का अनुभव और क्षमता है।''

यह दावा किया जाता है कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चिंताओं को समग्र और एकीकृत तरीके से संबोधित किया जाना चाहिए। लैंगिक दृष्टिकोण से, यह महत्वपूर्ण है कि लैंगिक समानता को केवल एक सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दे के रूप में न देखा जाए, बल्कि आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी इसका मूल्यांकन किया जाए, सतत विकास प्राप्त करने के लिए लैंगिक समानता को एक क्रॉस–कटिंग लक्ष्य के रूप में मान्यता दी जाए।

सतत विकास को सभी राष्ट्रीय नीतियों का शीर्ष प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि पृथ्वी पर वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके। यह सभी रूपों में जीवन की समर्थन क्षमता को संरक्षित करने के बारे में है। यह लोकतांत्रिक और कानून के आदर्शों पर आधारित है, साथ ही सभी के लिए स्वतंत्रता और समान अवसर जैसे मौलिक अधिकारों का सम्मान। यह पीढ़ियों और पीढ़ीय सहयोग को प्रोत्साहित करता है। यह एक जीवंत अर्थव्यवस्था को विकसित करने का इच्छुक है जिसमें उच्च स्तर की रोजगार और शिक्षा, स्वास्थ्य संरक्षण, सामाजिक और स्थानीय एकीकरण, और पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ सांत्वनिक और सुरक्षित दुनिया को विकसित करने की आशा है जो सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करती है।

महिलाएं समय के साथ ऐसी नीतियों और अभ्यासों के पक्षधर की साख करती रही हैं जो भविष्य की पीढ़ियों के स्वास्थ्य और भलाई को खतरे में न डालें। वे बेहतर जीवन की स्थितियों और पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्ष करती रही हैं। लगभग हर देश में, महिलाएं पोषण, बच्चों की देखभाल, और घर के प्रशासन के लिए प्रमुख जिम्मेदारी साझा करती हैं। वे पर्यावरण संरक्षण में भी संलग्न हैं। अधिकांश गरीब देशों में महिलाएं महत्वपूर्ण किसान, पशुपालक, और जल और ईंधन एकत्र करने वाले हैं। उनके कार्यों के बावजूद, महिलाएं स्थानीय, राष्ट्रीय, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण और विकास से जुड़े निर्णय लेने के लिए निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में कम प्रतिनिधित्व में हैं। सालों से उनकी कौशल, ज्ञान, और दृष्टिकोण को अनदेखा किये जाने के बाद, महिलाएं अपनी आवाज को सुने जाने की मांग कर रही हैं।

महिला सशक्तिकरण के लिए कुछ हालिया पहल

- एमजीएनआरईजीए, दुनिया का सबसे बड़ा रोजगार गारंटी योजना, सभी महिलाओं के आधे से अधिक को रोजगार प्रदान करती है।
- 2016 में एक ऐतिहासिक निर्णय द्वारा 26 सप्ताह की पूर्णतया वेतनयुक्त मातृत्व अवकाश की गारंटी के माध्यम से जुड़े प्राचीन विधान और प्रक्रियाओं की सुधार विधान और प्रक्रियाओं की सुधार की जा रही है, जिससे महिलाओं को सहभागिता करने की प्रोत्साहना मिलती है।

- नई विशाखा मार्गदर्शिकाएँ कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न के लिए शून्य सहिष्णुता नीति को ले जाने की क्षमता रखती है।
- केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित कार्यक्रमों जैसे कि सर्व शिक्षा अभियान और 2009 के शिक्षा के अधिकार अधिनियम ने महिलाओं के सेकेंडरी स्कूल में ग्रॉस नामांकन दर को बढ़ाया है, जो 2008 में 55.5 प्रतिशत से 2018 में 80.29 प्रतिशत तक बढ़ गया है। उच्चतर माध्यमिक गैर–उच्चतर शिक्षा में महिला शिक्षकों का प्रतिशत भी 60.86 प्रतिशत तक बढ़ गया है।
- कई हाल के और भविष्य के प्रयासों द्वारा कई सामाजिक उद्यमियों ने महिलाओं को उनके अभिनवता को व्यक्त करने और उन्हें जीविका कमाने का अवसर प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। इससे ग्रामीण महिलाओं को अपनी आजीविका कमाने की संभावना होती है।
- कई फिनटेक कंपनियों ने महिलाओं की शक्तिकरण पर काम करना शुरू किया है।
- कई बड़ी कंपनियां भी अपने कार्यक्षेत्र के माध्यम से महिलाओं की शक्तिकरण के प्रति अपने प्रतिबद्धता में जुड़ी हैं। बेहतर रोजगार सृजन, शिशु और बुजुर्ग देखभाल के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना, और काम से और वापसी करने के लिए यात्रायात की सुरक्षा, सभी यह महिलाओं के रोजगार में प्रभावी रूप से बाधाओं को हटाने में योगदान कर रहे हैं। भविष्य के दशक में लंबी समयिक लक्ष्य को पूरा करने के लिए ष्मॉडर्न सावित्रीच्या लेकीष् को शक्तिशाली बनाया जाना चाहिए।

गृह विज्ञान शिक्षाः महिला सशक्तिकरण और सतत विकास की कुंजी

हर किसी के जीवन को उनकी शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। लोगों को अपने जीवन, समाज, और समुदाय पर अधिक प्रभाव देने की प्रक्रिया को शक्तिशाली बनाने की प्रक्रिया को शक्तिशालीकरण कहा जाता है। ष्होम इकोनॉमिक्स घर को चीजों के प्रभुत्व से आजादी और उनके आदर्शों के समुचित अधीनता की दिशा में है,ष कहीं रिचर्ड्स, होम इकोनॉमिक एसोसिएशन की प्रथम अध्यक्षा ने कहा। होम साइंस एक बहुमुखी अध्ययन शाखा है जो स्वास्थ्य, पोषण, बच्चों की देखभाल, टेक्सटाइल और गारमेंट डिजाइन, संसाधन प्रबंधन, और अन्य घर से संबंधित विषयों का अध्ययन करता है। इसलिए, होम साइंस शिक्षा घरेलू और परिवार प्रबंधन के हर क्षेत्र को शामिल करती है। यह एक श्कलाश है क्योंकि यह संसाधनों का कुशल प्रबंधन में मदद करती है, और यह शविज्ञानश है क्योंकि यह विषय में ज्ञान प्रदान करके परिवार जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है। होम साइंस एक एकीकृत दृष्टिकोण शामिल करती है जो सिद्धांत, व्यावहारिक, और क्षेत्र कार्य को जोड़ने के लिए निर्मित किया गया है, और छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने में मदद करने के लिए नवाचारी तरीके से बनाया गया है।

होम साइंस ने राष्ट्रीय विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान किया है जिसके द्वारा छात्रों को एक्सटेंशन और समुदाय आउटरीच गतिविधियों को संचालित करने के लिए तैयार किया जाता है। छात्रों को एक वैज्ञानिक मानसिकता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। होम साइंस शिक्षा का मुख्य ध्यान छात्रों को समकालीन प्रौद्योगिकी, परिवार और समुदाय संबंधन उपायों, और मानव विकास के लिए संसाधन स्थायित्व के प्रति अवगत कराने पर है। होम साइंस एक ऐसी विषय है जो विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, और प्रौद्योगिकी के तत्वों को मिलाकर मानव अस्तित्व के अध्ययन और सुधार में सहायक है। इसलिए, इसका दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से अन्तरविषयीय है।

होम साइंस ने अपने पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का उपयोग किया है, जिसमें छात्रों को शिक्षा, अनुसंधान, और विस्तार में शामिल किया गया है। होम साइंस शिक्षा एक व्यक्ति के परिवार, समुदाय, और समाज के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के साथ उसके गतिशील बातचीत के महत्व को भी दर्शाती है। उच्च शिक्षा में होम साइंस का अध्ययन करने वाले छात्रों को अपने कौशल को समाप्त करने का अवसर मिलता है और साथ ही सामाजिक जिम्मेदारी का भाव विकसित होता है। आज की दुनिया में, होम साइंटिस्ट सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की व्यक्तिगत और समुदाय क्षमता का विकास के पक्ष में वकालत करते हैं। वे समुदाय की महिलाओं और युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण देते हैं और जीवन के हर क्षेत्र से उन्हें शिक्षित करते हैं। कई होम साइंटिस्ट सफल उद्यमियों में बदल गए हैं। वे अब नौकरी खोजने वाले नहीं हैं, बल्कि रोजगार प्रदाता बन गए हैं। अनुसंधान संगठनों, खाद्य और वस्त्र उद्योग, पोषण अभ्यास, शिक्षा और बाल विकास क्षेत्र, हरित निर्माण प्रमाणीकरण, रणनीतिक योजना, और संचार प्रौद्योगिकियों में, वे नौकरियों को प्राप्त और प्रदान करते हैं।

खाद्य और पोषण, फैब्रिक और परिधान विज्ञान, मानव विकास और बचपन अध्ययन, संसाधन प्रबंधन और डिजाइन एप्लिकेशन, और डेवलपमेंट कम्युनिकेशन और एक्सटेंशन होम साइंस में उपलब्ध पांच अवसरों में से हैं। होम साइंस शिक्षा भी अनुशासनिक ज्ञान, संचार कौशल, गंभीर विचार, सहयोगध्समूह कार्य, और

बहुसांस्कृतिक समर्थता को समेटती है, जो लंबी उम्र तक शिक्षा को समर्थन प्रदान करते हैं। छात्रों को होम साइंटिस्ट दर्शन को समझना चाहिए, जो लंबे समय तक विकास के लिए उनके समुदाय से लाभ देने का सिद्धांत है। होम साइंस ने विकसित और विकासशील देशों दोनों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। सबसे महत्वपूर्ण रूप से, यह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में विविध रोजगार विकल्प प्रदान करके योगदान करता है, जिसमें वेतन और स्व–रोजगार दोनों शामिल हैं। इसने महिलाओं के सशक्तिकरण और दीर्घकालिक विकास में भी मदद की है, होम साइंस के क्षेत्र से महिलाओं को सफल उद्यमियों बनने और निगमों में नेतृत्व के पदों पर होने में सहायक होता है।

गृह विज्ञान के क्षेत्र में नौकरी के अवसर

तालिका 1: विशिष्ट क्षेत्रों में गृह वैज्ञानिकों की प्रतिनिधि भूमिकाएँ

विशेषज्ञता	प्रतिनिधि भूमिकाएँ
खाद्य विज्ञान, और पोषण	खाद्य उत्पाद परीक्षक, गुणवत्ता नियंत्रण तकनीशियन, आहार सहायक, खाद्य तकनीशियन, आहार सहायक, आहार विशेषज्ञ तकनीशियन, गृह अर्थशास्त्री, आहार विशेषज्ञ, खाद्य तकनीशियन, पोषण विशेषज्ञ, कैटरर, बेकर, खाद्य सेवा प्रबंधक आदि।
वस्त्र एवं कपड़ा	कपड़ाध्सहायक उपकरण अनुमानक, कपड़ा उद्योग या कढ़ाई इकाई में कर्मचारी, सहायक डिजाइनर, फैशन चित्रकार, कपड़ा तकनीशियन, बिक्री सहयोगी, माल प्रदर्शितकर्ता, फैशन क्रेता आदि।
बाल वृद्धि एवं विकास	प्रीस्कूल शिक्षक, विशेष शिक्षा सहयोगी, स्कूल के बाद कार्यक्रम पर्यवेक्षक, प्रीस्कूल सहयोगी, पारिवारिक बाल देखभाल प्रदाता, मनोरंजन सहयोगी, शिक्षक सहयोगी, बाल दिवस देखभाल पर्यवेक्षक, डेकेयर सेंटर, क्रेच, नर्सरी स्कूल आदि।
संचार एवं विस्तार	पत्रकार, परामर्शदाता, रिपोर्टर, समाचार पाठक, मीडिया प्रोग्रामर, शिक्षक, अन्वेषक, परामर्शदाता और शोधकर्ता प्रोफेसर, गैर–सरकारी संगठन, मीडिया योजनाकार और प्रबंधक, कार्यक्रम समन्वयक आदि।
गृह प्रबंधन	इंटीरियर डिजाइनिंग, फर्निशिंग और रखरखाव शोरूम सहायक, इंटीरियर डिजाइन सहयोगी, आतिथ्य पर्यवेक्षक, फर्निशिंग बिक्री सहयोगी, विंडो डिस्प्ले डिजाइनर, इंटीरियर डिजाइन सहायक, फोटो स्टाइलिस्ट, फर्निशिंग खरीदार,

महिला गृह वैज्ञानिक समाज के लिए रोल मॉडल के रूप में

अपने अद्वितीय प्रयासों के माध्यम से, मुट्ठी भर असाधारण महिलाएं अपने जीवन में असाधारण रूप से शक्तिशाली और सफल बन गई हैं। वे आज की महिलाओं की प्रेरणा और प्रेरणा का स्रोत हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे दिया गया है–

मनप्रीत बराड़ (मॉडल, मिस इंडिया 1995)

मनप्रीत कौर बराड़ भारत की एक अभिनेत्री और मॉडल हैं। 1995 में, उन्हें मिस इंडिया का ताज पहनाया गया और मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में प्रथम रनर–अप बनीं। मनप्रीत का जन्म 9 जून 1973 को मिजोरम, भारत में एक सिख परिवार में हुआ था। दिल्ली में लेडी इरविन कॉलेज वह जगह है जहाँ से उन्होंने स्नातक की डिग्री हासिल की। वह सामुदायिक संसाधन प्रबंधन और विस्तार सम्मान की छात्रा थी। वह विश्व प्रसिद्ध घड़ी निर्माता ओमेगा की ब्रांड एंबेसडर बन गईं।

श्यामला गोपालन (भारतीय–अमेरिकी कैंसर शोधकर्ता)

गोपालन श्यामला (7 दिसंबर, 1938 – 11 फरवरी, 2009) लॉरेंस बर्कले नेशनल लेबोरेटरी में एक बायोमेडिकल वैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रोजेस्टेरोन रिसेप्टर जीन की पहचान और विशेषता करके स्तन जीव विज्ञान और ऑन्कोलॉजी की शुरुआत की थी। वह अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और वकील और राजनीतिक टिप्पणीकार माया हैरिस की मां थीं।

रितु कुमार (फैशन डिजाइनर)

रीतु कुमार भारत की एक फैशन डिजाइनर हैं। उन्होंने लोरेटो कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ाई की और फिर अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए लेडी इरविन कॉलेज में जाई। कुमार ने कोलकाता में अपनी वस्त्र व्यापार की कंपनी शुरू की। उन्होंने अपनी करियर की शुरुआत 1960 और 1970 के दशक में ब्राइडल वियर और ईवनिंग गाउन्स के साथ की, और अगले दो दशकों में अंतरराष्ट्रीय बाजार में विस्तार किया। कुमार की कंपनी के स्टोर्स पेरिस, लंदन, और न्यूयॉर्क के अलावा भारत में भी लॉन्च किए गए हैं। उनके डिजाइन

में रीतु कुमार ने प्राकृतिक कपड़े और पारंपरिक मुद्रण और बुनाई की तकनीकों का उपयोग किया है। उन्होंने अपने काम में पश्चिमी पहलुओं को भी शामिल किया है, लेकिन वे प्रायः पारंपरिक साड़ी डिजाइन के अनुरूप ही रही हैं। प्रिंसेस डायना, प्रियंका चोपड़ा, लारा दत्ता, दीपिका पादुकोण, और माधुरी दीक्षित ने उनके डिजाइन पहने हैं।

थंगम फिलिप (पद्म श्री नागरिक पुरस्कार विजेता)

थंगम एलिजाबेथ फिलिप (1921–2009) भारतीय आतिथ्य शिक्षा के अग्रणी और पोषण विशेषज्ञ थे। वह मुंबई के इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट की एमेरिटस प्रिंसिपल और कई कुकबुक की लेखिका थीं। फिलिप को 1976 में भारत सरकार द्वारा चौथा सर्वोच्च भारतीय नागरिक सम्मान, पद्म श्री प्रदान किया गया था। वह एफएओ सेरेस मेडल और फ्रांस के नाइटहुड ऑफ द ऑर्डर ऑफ कॉर्डन ब्लू डू सैंट एस्प्रिट के प्राप्तकर्ता थे।

सुषमा सेठ (अभिनेता और संस्थापक यात्रिक थिएटर ग्रुप)

सुषमा सेठ (20 जून, 1936 को जन्मी) एक भारतीय अभिनेत्री हैं जो प्रदर्शन, फिल्मों और टेलीविजन में काम कर चुकी हैं। उन्होंने अपनी करियर 1950 के दशक में शुरू की और दिल्ली स्थित एक थिएटर कंपनी यात्रिक के संस्थापक सदस्य रहीं। जुनून उनकी पहली फिल्म थी, जो 1978 में रिलीज हुई। उनकी सबसे पहचानी जाने वाली भूमिका है उनके टेलीविजन सीरियल श्हम लोगश (1984द1985) में दादी के रूप में, जिसमें उन्होंने एक मां और दादी का किरदार निभाया। उन्होंने देव राज अंकुर, राम गोपाल बजाज, मनीष जोशी बिस्मिल, और चंद्रशेखर शर्मा सहित अन्यों के साथ सहयोग किया है।

चित्रांगदा सिंह (अभिनेता)

चित्रांगना सिंह (जन्म 30 अगस्त 1976) एक भारतीय अभिनेत्री हैं जो मुख्य रूप से हिंदी फिल्मों में दिखाई देती हैं। ये साली जिंदगी, हजारों ख्वाहिशें ऐसी आदि उनकी फिल्मों में से हैं। सिंह एक ब्रांड एंबेसडर के रूप में एयरटेल, पैराशूट, प्यूमा, बोर्जेस ऑलिव ऑयल, गार्नियर, अलीवा क्रैकर्स, ताज महल टी और जोयालुक्कास ज्वैलर्स का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निष्कर्ष

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्धृत किया गया कि ष्हमारी मातृ शक्ति हमारा गर्व है। महिला सशक्तिकरण हमारे प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है।ष महिलाओं के योगदान को दी जानी चाहिए। महिलाएं अपने बच्चों के शिक्षा और सामाजिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिसमें उन्हें पर्यावरण के प्रबंधन और जिम्मेदारी के बारे में शिक्षा देना शामिल है। महिलाओं को पर्यावरण से संबंधित निर्णय लेने में एक मजबूत भूमिका देने और उन्हें ष्हरित अर्थव्यवस्थाष में भाग लेने की सुविधा प्रदान करने के लिए और अधिक कार्य किया जाना चाहिए। महिलाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप और योग्यता निर्माण कार्यक्रमों की अधिक आवश्यकता है। परिवार, समुदाय और समाज के सम्पूर्ण में महिलाओं की भागीदारी को सामाजिक–सांस्कृतिक और धार्मिक नीतियों से मुक्त होना चाहिए जो महिलाओं को भाग लेने से रोकती हैं। विचार की एक बदलाव की आवश्यकता है, खासकर उन पुरुषों के बीच जो अब इस क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

स्वास्थ्य, शिक्षा, सूचना, आत्म–विकास के लिए जीवन भर की सीख, व्यावसायिक कौशल, रोजगार और आय कमाने के अवसर, तकनीकी सेवाएँ, विरासत और विवाह, सामान्य संसाधन, ऋण, प्रौद्योगिकी, बाजार, जन–सांविधानिक साधन, परिवार नियोजन, महिला के अधिकार, और अन्य कारक सशक्तिकरण में योगदान करते हैं। होम साइंस शिक्षा ने महिलाओं को कार्यस्थल में अधिक अधिकार दिया है। होम साइंस शिक्षा ने साबित किया है कि एक महिला एक शिक्षिका, शोधकर्ता, उद्यमिता, और प्रशासक के रूप में होममेकर के अतिरिक्त भी हो सकती है। इस तरह, यह महिला के योग्यताओं का उपयोग करता है और जीवन के कई क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं का प्रदर्शन करता है।

संदर्भ

- वर्गास, सी.एम. (2002)। सतत विकास में महिलाएँरू स्वस्थ जीवन के लिए साझेदारी के माध्यम से सशक्तिकरण। विश्व विकास, 30(9), 1539–1560।
- बेयेह, ई. (2016)। इथियोपिया के सतत विकास में महिलाओं को सशक्त बनाने और लैंगिक समानता हासिल करने की भूमिका। प्रशांत विज्ञान समीक्षा बीरू मानविकी और सामाजिक विज्ञान, 2(1), 37–42।
- रोड्रिग्ज–डोमेनेच, एम.ए., बेल्लो–ब्रावो, जे., और पिटेंड्रिघ, बी.आर. (2019)। सीमाओं के बिना वैज्ञानिक एनिमेशन ̈(ॅ।ठ)रू सतत विकास के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक अभिनव रणनीति। स्थिरता विज्ञान, 14(4), 1105–1116।

- लॉसन, एच.ए. (2005)। लोगों को सशक्त बनाना, सामुदायिक विकास को सुविधाजनक बनाना और सतत विकास में योगदान देनारू खेल, व्यायाम और शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों का सामाजिक कार्य। खेल, शिक्षा और समाज, 10(1), 135–160।
- राशिद, एल. (2019)। उद्यमिता शिक्षा और सतत विकास लक्ष्यरू एक साहित्य समीक्षा और नाजुक राज्यों और प्रौद्योगिकी–सक्षम दृष्टिकोणों पर नजदीकी नजर। स्थिरता, 11(19), 5343.
- अकिनवाले, ए.ए. (2023)। लैंगिक समानता और सामाजिक प्रगतिरू उप–सहारा अफ्रीका में सतत विकास के लिए महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन रिसर्च एंड एडवांस्ड स्टडीज।
- बोलुक, के.ए., कैवलियरे, सी.टी., और ह्विगिंस–डेस्बिओल्स, एफ. (2019)। पर्यटन में संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य 2030 एजेंडा पर पूछताछ के लिए एक महत्वपूर्ण रूपरेखा। सतत पर्यटन जर्नल.
- कोपनिना, एच. (2020)। भविष्य के लिए शिक्षा? सतत विकास लक्ष्यों के लिए शिक्षा का आलोचनात्मक मूल्यांकन। द जर्नल ऑफ एनवायर्नमेंटल एजुकेशन, 51(4), 280–291।
- पावलोवा, एम. (2008)। सतत विकास के लिए प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक शिक्षारू भविष्य के लिए व्यक्तियों को सशक्त बनाना (खंड 10)। स्प्रिंगर साइंस एंड बिजनेस मीडिया।
- अमुसन, एल., अकोकुवेबे, एम.ई., और ओडुलारू, जी. (2021)। नाइजीरिया में नवीन कृषि वित्तपोषण को बढ़ावा देने के लिए एजेंसी के रूप में कृषि में महिला विकास। अफ्रीकी जर्नल ऑफ फूड, एग्रीकल्चर, न्यूट्रिशन एंड डेवलपमेंट, 21(7), 18279–18299।
- लैंगर, ए., मेलेइस, ए., नॉल, एफ.एम., एटुन, आर., अरन, एम., अरेओला–ओर्नेलस, एच., ... और फ्रेंक, जे. (2015)। महिलाएँ और स्वास्थ्यरू सतत विकास की कुंजी। द लांसेट, 386(9999), 1165–1210।

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY
ADVANCED SCIENCE INDEX
ADVANCED SCIENCES INDEX